तत्त्वार्थसूत्र

परिचय - पुनरावर्तन

मूलसूत्र

हितोपदेशी　　　　वीतरागी

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।

ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये॥

सर्वज्ञ　　　　प्रयोजन - भावना

अब सम्यग्ज्ञान के भेद कहते हैं --

मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानि ज्ञानम् ।।९ ।।

अर्थ – मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान और केवलज्ञान – ये पाँच (ज्ञानम्) ज्ञान हैं ।

आगे की विषय-वस्तु....

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
अब सम्यग्ज्ञान के भेद कहते हैं --	९	१
कौन से ज्ञान प्रमाण है ?	१०	१
परोक्ष एवं प्रत्यक्ष प्रमाण के भेद	११-१२	२
मतिज्ञान के दूसरे नाम	१३	१
मतिज्ञान की उत्पत्ति के समय निमित्त -	१४	१
मतिज्ञान के क्रम के भेद तथा उनका स्वरूप	१५-१९	५
श्रुतज्ञान का वर्णन, उत्पत्ति का क्रम तथा उसके भेद	२०	१

कौन से ज्ञान प्रमाण है ?

तत्प्रमाणे ॥ १० ॥

अर्थ - [तत्] उपरोक्त पाँचों प्रकार के ज्ञान ही [प्रमाणे] प्रमाण (सच्चे ज्ञान) हैं।

अध्याय १: सूत्र १० - कौन से ज्ञान प्रमाण है ?

तत्प्रमाणे ।।१०।। - टीका

- नववें सूत्र में कहे हुए पाँचों ज्ञान ही प्रमाण हैं; अन्य कोई ज्ञान प्रमाण नहीं है।
- प्रमाण के दो भेद हैं, प्रत्यक्ष और परोक्ष।

अध्याय १: सूत्र १० - कौन से ज्ञान प्रमाण है ?

तत्प्रमाणे ।।१०।। - ९ से १२ सूत्र की विषयवस्तु

- प्रमाण [सूत्र ९]
  - परोक्ष [सूत्र १०]
    - मतिज्ञान [सूत्र ११]
    - श्रुतज्ञान [सूत्र ११]
  - प्रत्यक्ष [सूत्र १०]
    - विकल [सूत्र १२]
      - अवधिज्ञान [सूत्र १२]
      - मन:पर्ययज्ञान [सूत्र १२]
    - सकल [सूत्र १२]
      - केवलज्ञान [सूत्र १२]

अध्याय १: सूत्र १० - कौन से ज्ञान प्रमाण है ?

तत्प्रमाणे ।।१०।। - [प्रमाण] ज्ञान की उत्पत्ति किससे ?

[प्रमाण] ज्ञान की उत्पत्ति किससे ?

- स्व से... ?
- पर से... ?

अध्याय १: सूत्र १० - कौन से ज्ञान प्रमाण है ?

तत्प्रमाणे ।।१०।। - इन्द्रिय ज्ञान प्रमाण नहीं है...

- यह ध्यान रहे कि इन्द्रियाँ अथवा इन्द्रियों और पदार्थों के सम्बन्ध (सन्निकर्ष), ये कोई प्रमाण नहीं हैं
  - अर्थात् न तो इन्द्रियों से ज्ञान होता है
  - और न इन्द्रियों और पदार्थों के सम्बन्ध से ज्ञान होता है,
- किन्तु उपरोक्त मति आदि ज्ञान, स्व से होते हैं; इसलिए ज्ञान प्रमाण है।

अध्याय १: सूत्र १० - कौन से ज्ञान प्रमाण है ?

तत्प्रमाणे ।।१०।। - प्रश्न...उत्तर...इन्द्रिय ज्ञान प्रमाण नहीं है...

प्रश्न – इन्द्रियाँ प्रमाण हैं, क्योंकि उनके द्वारा ज्ञान होता है ?

उत्तर – इन्द्रियाँ प्रमाण नहीं है, क्योंकि इन्द्रियाँ जड़ हैं और ज्ञान तो चेतन की पर्याय है, वह जड़ नहीं है; इसलिए आत्मा के द्वारा ही ज्ञान होता है।

(श्री जयधवला पुस्तक भाग १, पृष्ठ ५४-५५)

अध्याय १: सूत्र १० - कौन से ज्ञान प्रमाण है ?

तत्प्रमाणे ।।१०।। - प्रश्न...उत्तर...ज्ञेयों से ज्ञान नहीं होता...

प्रश्न - यह ठीक है न कि प्रस्तुत ज्ञेय पदार्थ हों तो उससे ज्ञान होता है ?

उत्तर - यह ठीक नहीं है। यदि प्रस्तुत पदार्थ (ज्ञेय) और आत्मा इन दोनों के मिलने से ज्ञान होता तो ज्ञाता और ज्ञेय, इन दोनों को ज्ञान होना चाहिए, किन्तु ऐसा नहीं होता।

(सर्वार्थसिद्धि, पृष्ठ ३३२)

अध्याय १: सूत्र १० - कौन से ज्ञान प्रमाण है ?

तत्प्रमाणे ।।१०।। - प्रश्न...उत्तर...उपादान - निमित्त व्यवस्था...

- यदि उपादान और निमित्त ये दो होकर एक कार्य करें तो उपादान और निमित्त की स्वतन्त्र सत्ता न रहे।
- उपादान, निमित्त का कुछ नहीं करता और न निमित्त, उपादान का कुछ करता है।
- प्रत्येक पदार्थ स्वतन्त्ररूप से अपने-अपने कारण से अपने लिए उपस्थित होते हैं, ऐसा नियम होने से अपनी योग्यतानुसार निमित्त-उपादान दोनों के कार्य स्वतन्त्र, पृथक्-पृथक् होते हैं।

तत्प्रमाणे ।।१०।। - प्रश्न...उत्तर...उपादान - निमित्त व्यवस्था...

- यदि उपादान और निमित्त ये दोनों मिलकर काम करें तो दोनों उपादान हो जाएँ, अर्थात् दोनों की एक सत्ता हो जाए, किन्तु ऐसा नहीं होता।

तत्प्रमाणे ।।१०।। - प्रश्न...उत्तर...उपादान - निमित्त व्यवस्था...

- इस सम्बन्ध में ऐसा नियम है कि अपूर्ण ज्ञान का विकास जिस समय अपना व्यापार करता है, उस समय उसके योग्य बाह्य पदार्थ, अर्थात् इन्द्रियाँ, प्रकाश, ज्ञेयपदार्थ, गुरु, शास्त्र इत्यादि (परद्रव्य) अपने-अपने कारण से ही उपस्थित होते हैं, ज्ञान को उनकी प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती। निमित्त-नैमित्तिक का तथा उपादान-निमित्त का ऐसा मेल होता है।

अध्याय १: सूत्र १० - कौन से ज्ञान प्रमाण है ?

तत्प्रमाणे ।।१०।। - प्रश्न...उत्तर...सम्यग्ज्ञान का फल...

प्रश्न - आप सम्यग्ज्ञान का फल अधिगम कहते हो, किन्तु वह (अधिगम) तो ज्ञान ही है, इसलिए ऐसा मालूम होता है कि सम्यग्ज्ञान का कुछ फल नहीं होता।

उत्तर - सम्यग्ज्ञान का फल आनन्द (सन्तोष), उपेक्षा (राग-द्वेष रहितता) और अज्ञान का नाश है।

(सर्वार्थसिद्धि, पृष्ठ ३३४)

अध्याय १: सूत्र १० - कौन से ज्ञान प्रमाण है ?

तत्प्रमाणे ।।१०।। - [प्रमाण] ज्ञान की उत्पत्ति स्व से होती है।

इससे यह सिद्ध होता है कि ज्ञान, स्व से ही होता है; परपदार्थ से नहीं होता।

तत्प्रमाणे ।।१०।। - सूत्र की विषयवस्तु

नौवें सूत्र में कथित पाँच सम्यग्ज्ञान ही प्रमाण हैं, उनके अतिरिक्त अन्य मत में भिन्न-भिन्न प्रमाण कहते हैं, किन्तु वह ठीक नहीं है। जिस जीव को सम्यग्ज्ञान हो जाता है, वह सम्यक् मति और सम्यक् श्रुतज्ञान के द्वारा अपने को सम्यक्त्व होने का निर्णय कर सकता है और वह ज्ञान, प्रमाण अर्थात् सच्चा ज्ञान है ।।१०।।

आगे की विषय-वस्तु....

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
अब सम्यग्ज्ञान के भेद कहते हैं --	९	१
कौन से ज्ञान प्रमाण है ?	१०	१
परोक्ष एवं प्रत्यक्ष प्रमाण के भेद	११-१२	२
मतिज्ञान के दूसरे नाम	१३	१
मतिज्ञान की उत्पत्ति के समय निमित्त -	१४	१
मतिज्ञान के क्रम के भेद तथा उनका स्वरूप	१५-१९	५
श्रुतज्ञान का वर्णन, उत्पत्ति का क्रम तथा उसके भेद	२०	१

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र ११-१२

परोक्ष प्रमाण के भेद

आद्येपरोक्षम् ॥११॥

अर्थ - [आद्ये] प्रारम्भ के दो अर्थात् मतिज्ञान और श्रुतज्ञान [परोक्षम्] परोक्ष प्रमाण हैं।

अध्याय १: सूत्र ११- परोक्ष प्रमाण के भेद

आद्येपरोक्षम् ।।११।। - ९ से १२ सूत्र की विषयवस्तु

- प्रमाण [सूत्र ९]
  - परोक्ष [सूत्र १०]
    - मतिज्ञान [सूत्र ११]
    - श्रुतज्ञान [सूत्र ११]
      - संशयवान या भूलयुक्त नहीं है
      - सर्वथा सच्चे ज्ञान है
      - पर अपेक्षा से परोक्ष कहा है
      - स्व अपेक्षा से प्रत्यक्ष हैं
      - उपयोग के समय इन्द्रिय या मन का निमित्त होता है
  - प्रत्यक्ष [सूत्र १०]
    - विकल [सूत्र १२]
      - अवधिज्ञान [सूत्र १२]
      - मन:पर्ययज्ञान [सूत्र १२]
    - सकल [सूत्र १२]
      - केवलज्ञान [सूत्र १२]

आद्येपरोक्षम् ।।११।। - सम्यक्मतिज्ञान सम्बन्धी प्रश्न-उत्तर

- क्या सम्यक्मतिज्ञानवाला जीव यह जान सकता है कि मुझे सम्यग्ज्ञान और सम्यग्दर्शन है ?
- सम्यक्मतिज्ञानी , दर्शनमोहनीय प्रकृति के पुद्गलों को प्रत्यक्ष नहीं देख सकता और उसके पुद्गल उदयरूप हों तथा जीव उसमें युक्त हो तो क्या उसकी भूल नहीं होगी ?
- क्या सम्यक्मतिज्ञान यह जान सकता है कि अमुक जीव भव्य है या अभव्य ?

आद्येपरोक्षम् ।।११।। - सम्यक्श्रुतज्ञान सम्बन्धी स्पष्टीकरण

श्रुतज्ञान के तीन प्रकार हो जाते हैं -

(१) सम्पूर्ण परोक्ष

(२) आँशिक परोक्ष

(३) परोक्ष बिलकुल नहीं किन्तु प्रत्यक्ष

आद्ये परोक्षम ।।११।। - श्रुतज्ञान के तीन प्रकार

(१) शब्दरूप जो श्रुतज्ञान है, सो परोक्ष ही है तथा दूरभूत स्वर्ग-नरकादि बाह्य विषया का ज्ञान करानेवाला विकल्परूप ज्ञान भी परोक्ष ही है।

आद्ये परोक्षम।।११।। - श्रुतज्ञान के तीन प्रकार

(२) आभ्यन्तर में सुख-दुःख के विकल्परूप जो ज्ञान होता है, वह अथवा 'मैं अनन्त ज्ञानादिरूप हूँ' - ऐसा ज्ञान ईषत् (किञ्चित्) परोक्ष है।

आद्ये परोक्षम।।११।। - श्रुतज्ञान के तीन प्रकार

(३) निश्चय भावश्रुतज्ञान शुद्धात्मा के सम्मुख होने से सुख संवित्ति (ज्ञान) स्वरूप है। यद्यपि वह ज्ञान निज को जानता है, तथापि इन्द्रियों तथा मन से उत्पन्न होनेवाले विकल्पों के समूह रहित होने से निर्विकल्प है।(अभेदनय से) उसे 'आत्मज्ञान' शब्द से पहचाना जाता है। यद्यपि वह केवलज्ञान की अपेक्षा से परोक्ष है, तथापि छद्मस्थों के क्षायिक ज्ञान की प्राप्ति न होने से, क्षायोपशमिक होने पर भी उसे 'प्रत्यक्ष' कहा जाता है।

अध्याय १: सूत्र ११- परोक्ष प्रमाण के भेद

आद्येपरोक्षम् ।।११।। - सम्यक्मति-श्रुतज्ञान सम्बन्धी प्रश्न

इस सूत्र में मति और श्रुतज्ञान को परोक्ष कहा है, तथापि आपने उसे ऊपर 'प्रत्यक्ष' कैसे कहा है ?

प्रत्यक्ष प्रमाण के भेद

प्रत्यक्षमन्यत् ॥ १२ ॥

अर्थ - [अन्यत्] शेष तीन अर्थात् अवधि, मनःपर्यय और केवलज्ञान [प्रत्यक्षम्] प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

अध्याय १: सूत्र १२ - प्रत्यक्ष प्रमाण के भेद

प्रत्यक्षमअन्यत् ।।१२।। - ९ से १२ सूत्र की विषयवस्तु

- प्रमाण [सूत्र ९]
  - परोक्ष [सूत्र १०]
    - मतिज्ञान [सूत्र ११]
    - श्रुतज्ञान [सूत्र ११]
  - प्रत्यक्ष [सूत्र १०]
    - सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष [सूत्र ११]
    - संवेदन प्रत्यक्ष [सूत्र ११]
    - परमार्थिक प्रत्यक्ष [सूत्र १२]
      - विकल [सूत्र १२]
        - अवधिज्ञान [सूत्र १२]
        - मन:पर्ययज्ञान [सूत्र १२]
      - सकल [सूत्र १२]
        - केवलज्ञान [सूत्र १२]

प्रत्यक्षमन्यत् ॥ १२ ॥ - सूत्र का सिद्धांत

अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान, विकल–प्रत्यक्ष हैं तथा केवलज्ञान, सकल प्रत्यक्ष है। [प्रत्यक्ष = प्रति+अक्ष] 'अक्ष' का अर्थ आत्मा है। आत्मा के प्रति जिसका नियम हो, अर्थात् जो परनिमित्त–इन्द्रिय, मन, आलोक (प्रकाश), उपदेश आदि से रहित आत्मा के आश्रय से उत्पन्न हो, जिसमें दूसरा कोई निमित्त न हो,ऐसा ज्ञान, प्रत्यक्षज्ञान कहलाता है।

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र ११-१२

जिनवाणी स्तुति